दिनकरकेकाव्योंमेंभाषाप्रयोग

Suryakanth
Research Scholar
Department of Hindi, Bangalore University, Bangalore

स्वतंत्रोत्तरभारतमेंराष्ट्रकीभाषाहिन्दीबनी।उसकेपूर्वव्रजऔरअवधीसाहित्यिकभाषाबनीहुईथी।

इन्हेंमध्यकालीनभाषाकेरूपमेंस्वीकारकियाजाताहै।

खडीबोलीकाविकासहोजानेकेबादसाहित्यक्षेत्रकीभाषाकेरूपमेंप्रचलनमेंआयी।

भारतेन्दुहरिश्चन्द्रकेसमयमेंखड़ीबोलीकाविकासहोनेलगा।

दिनकरनेखड़ीबोलीकोएकसशक्तमाध्यमकेरूपमेंस्वीकारकियाथाइतनाहीनहींसशक्तकविकेरूपमेंसा

हित्यजगतमेंउभरकरआनेकेलिएखड़ीबोलीहीमूलकारणहै।

उनकेपहलेककवियोंनेखड़ीबोलीसेअधिकव्रजभाषाकाप्रयोगकरनादेखाजासकताहै।

दिनकरकेअनुसारगद्यहोयापद्यअभिव्यंजनकेलिएखड़ीबोलीहीसशक्तभाषाहै।

समयऔरसमाजबदलते-बदलतेभाषाभीपरिवर्तितहोनेलगी।

फलतःकवियोंकीमानसिकदशापरिवर्तितहुई।कविअपनेदरबारोंमेंमनोरंजनार्थसहृसक्तभाषाकीउपयो

गिताकरनाआवशतोथाहीलेकिनक्रमशःसोचनेलगेकिव्रजऔरअवधियोंकीअपेक्षाखड़ीबोलीकाजनसमु

दायअधिकहै। खड़ीबोलीमेंलिखनेवालीकवितासाधारणजनतातकपहुँचपातीथी? नये-

नयेभावोंकोअभिव्यक्तकरनेजितनाखड़ीबोलीआसानलगताथाउतनाअन्य न

होनेकेकारणतत्कालीनकवियोंनेखड़ीबोलीकोस्वीकारकरलियाइनमेंदिनकरपरेनहींहै।

राष्ट्रकविमैथिलीशरणगुप्तहिन्दीभाषाकेअर्थातखड़ीबोलीकेप्रतिनिधिहै।

उनकेकाव्योंकीभाषाखड़ीबोलीहीरही।

दिनकरनेभीइसकोअवगतकियाकिकाव्यकीशोभाबढ़ानेकेलिएसरलऔरसाधारणशब्दोंकोछन्दोबद्धक

रनेकेलिएखड़ीबोलीहीसशक्तमाध्यमहै।

मैथिलीशरणगुप्तकेसंबंधमेंदिनकरकाकथनइससंदर्भकेलिएउल्लेखकरनाआवश्यकहै

“खड़ीबोलीकविताकाइतिहासगुप्तजीकीकृतियोंकाइतिहासहै।

उन्होंनेखड़ीबोलीकोउँगलीपकड़करचलनासिखाया,

उसकीजिह्वाकोशुद्धकियाऔरउसकेहृदयमेंप्रेमएवंमस्तिष्कमेंअभिनवविचारोंकासंचारकिया।

उनकाउत्थानद्विवेदीमंडलकेसाथबड़ेप्रकाशस्तंभकेरूपमेंहुआ।

जिसकेदूरगामीप्रकाशमेंखड़ीबोलीनेअपनीगंथव्यदिशाकाध्यानएवंअपनेआदर्शकाअवलोकनकिया।”इ

ससेसिद्धहोताहैकिखड़ीबोलीभाषाकोएकसशक्तसाधनमानचुकेथे।

अपनीरचनाओंकेमाध्यमखड़ीबोलीबनानेकेप्रतिइच्छुकथेऔरउसमेंपूर्णरूपसेसफलताप्राप्तकी।

साहित्यजगतमेंजितनेसारेसाहित्यकारोंकोदेखेजासकतेहैंउनमेंप्रत्येककविकिसी न

किसीसेप्रेरितरहनादेखाजासकताहै।

वैयक्तिकहोयासामाजिकस्थितिगतियोंकेअभिव्यंजनमेंसृजनात्मकरूपसेचिंतनकरनेकोई न

कोईप्रेरणायाकिसी न किसीप्रेरकरहतेहीहै।

दिनकरकेसंबंधमेंभीविचारकियाजासकताहैकिइनकेपीछेऐसेकौनप्रेरणादायकव्यक्तिरहेऔरदिनकरको

खड़ीबोलीमेंहीअपनेभावोंकोअक्षररूपदेनेकामार्गदर्शनयाप्रेरणास्रोतबनेरहे।

दिनकरकेसमयकोलक्षितकरविचारकियाजायेतोयहस्पष्टहोताहैकिछायावादकेपरिपक्वसमयथा।

खड़ीबोलीभीपूर्णरूपसेविकसितहोचुकीथी।

सुमित्रानंदनपंतऔरजयशंकरप्रसादजैसेदिग्गजसाहित्यकारखड़ीबोलीकोअपनीरचनाकीभाषाबनाचु

केथे।

फलस्वरूपदिनकरकीकाव्यभाषाभीखड़ीबोलीबनीकहनेमेंकोईसंदेहनहींहै।दिनकरनेइसबातकोस्वीकाराहैएकओरउन्होंनेअपनेअभिप्रायकोव्यक्तकियाहै

“मेरीकविताओंकीभाषाभीछायावादीयुगकेप्रयोगोंसेशिक्षालेकरतैयारहुईहै।”इससेविदितहोगाकिछायावादीकवियोंकाप्रभावइनपरभरपूरपड़ाहुआहै।

दिनकरनेजबकाव्यसृजनकरनाशुरूकियाथाउससमयप्रगतिवादीआंदोलनभीशुरूहोचुकाथा।

इसप्रगतिवादीसाहित्यकारोंकीभाषाभीखड़ीबोलीथीअतएवचारोंओरसेदिनकरकोप्रेरितकरनेमेंऔरखड़ीबोलीकाउपयोगकरनेमेंउनकीदेनमहत्वपूर्णकीहै। दिनकरनेएकओरकहाहै–

“किंतुरामायणपढ़तेसमयअभीभीमुझेतुलसीदासबननेकीइच्छाहुईहोऐसायादनहींआताहै।”

इसकातात्पर्ययहहैकिजिसअवधिभाषामेंतुलसीनेश्रीरामचरितमानसकीरचनाकीउसेपढ़नेतकयादहै किंतुप्रयुक्तभाषाअवधिकेप्रतिनहीं।

दिनकरनेसमकालीनअनेकपुस्तकेंपढ़ीऔरअन्यरचनाकारोंद्वाराप्रयुक्तखड़ीबोलीभाषाकेप्रतिमोहितथे। उनमेंप्रयुक्तशब्दप्रयोग, छन्दोबद्ध, रसप्रयोगआदिसेप्रभावितहोकरखड़ीबोलीमेंहीइसप्रकारलिखनेकीप्रेरणाप्राप्तहुईथी। तत्कालीनपत्र-पत्रिकाओंनेउन्हेंआकर्षितकियाथा। सरस्वति, सुधा, माधुरीजैसेअंकभीपढ़तेथे। उनपत्र-पत्रिकाओंमेंशुद्धखड़ीबोलीकाउपयोगकियाजाताथा। दिनकरनेसबसेअधिकमैथिलीशरणगुप्त, माखनलालचतुर्वेदी, सुभद्राकुमारीचौहान, रामनरेशत्रिपाठीजैसेदिग्गजोंसेप्रेरितथे। फिरभीअपनेकाव्यकीप्रेरणाकेमूलस्त्रोतोंकेसंबंधमेंकहाहै-“कविहोनेकीसामर्थ्यमुझमेंशायदनहींथी। यहक्षमतामुझमेंभारतवर्षकाध्यानकरनेसेजाग्रतहुई,

यहशक्तिमुझमेंभारतीयजनताकीआकुलताकोआत्मसातकरनेसेस्फुटितहुई।”

इनपंक्तियोंसेसमझसकतेहैंकिसमसामयिकआंदोलनयाक्रांतिकीध्वनियोंसेवेप्रभावितथे।

वस्तुतःक्रांतियाआंदोलनकानाराखड़ीबोलीमेंबुलंदहोजाताथा। यहभीएककारणहै।

दिनकरनेकलाकीद्रुष्टिसेदोसोपानमानेहैं। एकप्रथमप्रेरणाहोतोदूसराहैरचना।

प्रेरणाकेलिएशिक्षादीक्षा, संस्कारऔरसंवेदनशीलताकारणहै।

क्योंकिकविहृदयमेंभावुकतानहींहोतीतोकाव्यकासंस्कारउत्पन्ननहींहोता।

अंतरंगकीभावधाराएँअक्षररूपमेंप्रवहितहोनेकेलिएभावऔरसंस्कारदोनोंआवश्यहै।

खड़ीबोलीनेयेदोनोंप्रकारकेगुणदिनकरकेलिएदियाथाकहनेमेंकोईसंदेहनहींहै।

दिनकरकेरचनाकालमेंखड़ीबोलीकीरचनाओंकाविशेषमहत्वएवंप्रचलनभीरहाऔरपत्र-

पत्रिकाओंकीभाषाभीखड़ीबोलीहोनेकेकारणसंभवतःदिनकरकोउसओरआकर्षितकरनाभीकोईविशेष

पात्रनहीं।

अंततःकहाजासकताहैकिदिनकरनेअपनीसाहित्यकीभाषाखड़ीबोलीकोस्वीकारकरनेकेद्वाराअपनेसहृ

दयपाठकोंकोउत्कृष्टरचनाओंकेसाथअपनेभावोंकोपहुँचानेमेंसफलहुयेथे